अग्नि-पुराण

(द्वितीय खण्ड)

●

सम्पादक—

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

चारों वेद, १०८ उपनिषद्, षट् दर्शन

२० स्मृतयाँ और अठारह पुराणों के

प्रसिद्ध भाष्यकार

寄贈 昭和46年度科学研究費購入図書 合同海外学術調査団 氏

東京外国語大学 156980 47.3.31 図書館蔵書

❀

प्रकाशक—

संस्कृति-संस्थान,

ख्वाजाकुतुब (वेदनगर) बरेली

(उत्तर-पदेश)

प्रथम संस्करण) १९६८ (मूल्य ७ रु०

शब्द भी नहीं लिखा गया है। आरम्भ के कुछ अध्याय अग्निदेव के मुख से कहलाये गये हैं, इतना ही सम्बन्ध उनसे लगाया जा सकता है।

हाँ, एक कारण ऐसा हो सकता है जिसके आधार पर इसका 'अग्नि-पुराण' नाम सार्थक माना जा सके। इसमें विशेष रूप से शिल्प, विज्ञान और तरह-तरह की कलाओं और विद्याओं की जानकारी एकत्रित की गई है। इस प्रकार के ज्ञान से 'अग्नि-तत्त्व' का एक विशेष सम्बन्ध स्वीकार किया जा सकता है।

इसका सर्वाधिक प्रशंसनीय गुण हमको यह प्रतीत हुआ है कि आप इसे आदि से अन्त तक पढ़ जाइये, कहीं भी आपको कोई ऐसी बात नहीं मिलेगी जिसके आधार पर इसे किसी सम्प्रदाय से थोड़ा भी सम्बन्धित बताया जा सके। वैष्णव और शैव दोनों सम्प्रदायों की आवश्यक बातों की इसमें समान रूप से जानकारी कराई गई है। निन्दा, विरोध, अति-प्रशंसा इसमें किसी देवता की नहीं की गई है। इसमें जो धार्मिक नियमों, आचार-विचारों, तीर्थ, व्रत, दान, पूजा-उपासना आदि का वर्णन किया गया है वह सब निष्पक्षता की भावना से ही है। सच्चे अर्थों में यह भारतीय धर्म-कर्म, उपासना, ज्ञान, विज्ञान और विविध कलाओं का उपयोगी परिचय देने वाला 'ज्ञान-कोष' ही है।

आशा है प्राचीन भारत के विज्ञान तथा कला-कौशल की खोज से अनुराग रखने वाले सज्जनों को यह विशेष आकर्षक प्रतीत होगा, और इसके अध्ययन से उनमें वह प्रवृत्ति जागृत होगी जिससे वे इस शोध-खोज के क्षेत्र में आगे बढ़कर उल्लेखनीय कार्य कर सकेंगे।

—प्रकाशक

'अग्नि-पुराण' के दूसरे खंड की विषय-सूची

१०७-यजुर्विधानम्	...	६
१०८-उत्पात शान्ति	...	२२
१०९-विष्णु-पंजरम्	...	२८
११०-वेदशाखादिकथनम्	...	३०
१११-पुराण दानादि माहात्म्यम्	...	३४
११२-सूर्यवंशकीर्तनम्	...	३८
११३-सोमवंश वर्णनम्	...	४५
११४-यदुवंश वर्णनम्	...	४८
११५-द्वादश संग्राम	...	५६
११६-सिद्धौषधानि	...	६०
११७-सर्वरोगहराण्यौषधानि	...	७०
११८-रसादि लक्षणम्	...	७८
११९-वृक्षायुर्वेद	...	८३
१२०-नानारोगहराण्यौषधानि	...	८५
१२१-मन्त्ररूपौषध कथनम्	...	९४
१२२-मृतसंजीवकरासिद्धयोग	...	९६
१२३-मृत्युञ्जय कल्प	...	१०८
१२४-गज-चिकित्सा	...	११२
१२५-अश्ववाहरसार	...	११७
१२६-अश्व-चिकित्सा	...	१२७
१२७-अश्वशान्ति	...	१३५
१२८-गजशान्ति	...	१३७
१२९-गवायुर्वेद (गौ-चिकित्सा)	...	१४०

१३०-मन्त्र-परिभाषा	...	१४७
१३१-नागलक्षणानि	...	१५५
१३२-वासुदेवादि मन्त्र लक्षणम्	...	१६१
१३३-मुद्राणां लक्षणानि	...	१६८
१३४-शिष्येभ्या दीक्षादान विधि	...	१६९
१३५-आचार्यभिषेक विधान	...	१८२
१३६-मन्त्र साधना विधि—सर्वतोभद्रादि मण्डलानिच	...	१८३
१३७-सर्वतोभद्र मण्डलादि विधि कथनम्	...	१११
१३८-अपामार्जन विधानम्	...	१९७
१३९-निर्वाण दीक्षा सिद्ध्यर्थानां संस्काराणां वर्णनम्	...	२०५
१४०-पवित्रकारोपण विधि कथनम्	...	२०८
१४१-पवित्रकारोपणे पूजाहोमादि विधि	...	२१८
१४२-पवित्राधिवासन विधि	...	२२५
१४३-विष्णुपवित्रारोपण विधि	...	२२८
१४४-सर्वदेव साधारणतः पवित्रारोपण विधि	...	२३२
१४५-शिव प्रतिष्ठा विधि	....	२३५
१४६-गौरी प्रतिष्ठा विधि	...	२५०
१४७-सूर्य प्रतिष्ठा विधि	...	२५३
१४८-द्वार प्रतिष्ठा विधि	...	२५४
१४९-प्रासाद प्रतिष्ठा	...	२५५
१५०-दष्टचिकित्सा	...	२५८
१५१-पंचाङ्ग रुद्रविधानम्	...	२६३
१५२-विषहृन्मन्त्रौषधम्	...	२६७
१५३-गोनसादि चिकित्सा	...	२६९
१५४-बालादिग्रहहर—बालतन्त्रम्	...	२७३
१५५-गृहहृन्मन्त्रादि कथनम्	...	२८२
१५६-सूर्यार्चनम्	...	२८७

१५७-नानामन्त्रौषध कथनम्	...	२९३
१५८-अङ्गाक्षरार्चनम्	...	२९८
१५९-पंचाक्षरादि पूजामन्त्र	...	३०१
१६०-पंचपंचाद्विष्णुनामानि	...	३०७
१६१-त्रैलोक्य मोहन मन्त्र	...	३१०
१६२-नाना मन्त्र	...	३१६
१६३-त्वरिताज्ञानम्	...	३२१
१६४-सकलादि मन्त्रोद्धार	...	३२५
१६५-वागीश्वरी पूजा	...	३३०
१६६-मण्डलानि	...	३३१
१६७-गौर्यादि पूजा	...	३३९
१६८-देवालयमाहात्म्यम्	...	३४३
१६९-छन्दसार (१)	...	३४६
१७०-छन्दसार (२)	...	३४८
१७१-छन्दोजाति निरूपणम्	...	३५१
१७२-विषम् अर्द्धसम निरूपणम्	...	३५४
१७३-समवृत्त निरूपणम्	...	३५६
१७४-काव्यादि लक्षणम्	...	३६३
१७५-नाटक निरूपणम्	...	३६९
१७६-शृङ्गारादि रस निरूपणम्	...	३७३
१७७-रीति निरूपणम्	...	३८२
१७८-नृत्यादावङ्ग कर्म निरूपणम्	...	३८४
१७९-प्रलय वर्णनम्	...	३८७
१८०-आत्यान्तिक लय गर्भोत्पत्यो निरूपणम्	...	३९१
१८१-शरीरावयवः	...	३९९
१८२-नरक निरूपणम्	...	४०५
१८३-यम-नियम	...	४१२

१८४-आसन-प्राणायाम-प्रत्याहार ... ४१८
१८५-ध्यानम् ... ४२१
१८६-धारणा ... ४२७
१८७-समाधि ... ४३०
१८८-ब्रह्मज्ञान (१) ... ४३७
१८९-ब्रह्मज्ञान (२) ... ४४१
१९०-अद्वैत ब्रह्म विज्ञानम् ... ४५०
१९१ गीता-सार ... ४६१
१९२-यम गीता ... ४७१
१९३-आग्नेय-महापुराण-माहात्म्यम् ... ४७८

अग्निपुराण द्वितीय भाग

१०५ यजुर्विधानम्

यजुर्विधानं वक्ष्यामि भुक्तिमुक्तिप्रदं शृणु ।
ओंकारपूर्विका राम महाव्याहृतयो मताः ॥१
सर्वकल्मषनाशिन्यः सर्वकामप्रदास्तथा ।
आज्याहुतिसहस्रेण देवानाराधयेद्बुधः ॥२
मनसः काङ्क्षितं राम मनसेप्सितकामदम् ।
शान्तिकामो यवैः कुर्यात्तिलैः पापापनुत्तये ॥३
धान्यैः सिद्धार्थकैश्चैव सर्वकामकरैस्तथा ।
औदम्बरीभिरिध्माभिः पशुकामस्य शस्यते ॥४
दध्ना चैवान्नकामस्य पयसा शान्तिमिच्छतः ।
अपामार्गसमिद्भिस्तु कामयन्कनकं बहु ॥५
कन्याकामो घृताक्तानि युग्मशो ग्रथितानि तु ।
जातीपुष्पाणि जुहुयाद् ग्रामार्थी तिलतण्डुलान् ॥६
वश्यकर्मणि शाखोट वासापामार्गमेव च ।
विषासृङ्मिश्रसमिधो व्याधिघाताय भार्गव ॥७

पुष्कर ने कहा—अब मैं यजुर्वेद के विधान को बताता हूँ जो भुक्ति और मुक्ति दोनों के प्रदान करने वाला है । उसका तुम श्रवण करो । हे राम ! ओंकार जिनमें पहिले होता है ऐसी महाव्याहृतियाँ मानी गई हैं ॥१॥ ये समस्त कल्मषों की नाश करने वाली और सभी कामनाओं के प्रदान करने वाली होती हैं । पण्डित मानव का कर्त्तव्य है कि घृत की एक सहस्र आहुतियाँ देकर देवों की आराधना करे ॥२॥ हे राम ! मन से जो भी कुछ इच्छा की गई हो उस मन के इच्छित काम के फल को देने वाला है । जो शान्ति की कामना रखता